आह्वान के नियमित–अनियमित स्तम्भ

एक त्रैमासिक पत्रिका के रूप में 'आह्वान' का पहले अंक आपके सामने है। हम इसका प्रत्येक अंक पहले से बेहतर बनाने के लिए कटिबद्ध हैं। आगामी अंकों से हम इस पत्रिका में निम्नलिखित स्तम्भ चलायेंगे। इनमें से कुछ नियमित होंगे तो कुछ समय–समय पर दिये जायेंगे–

- सामयिकी
- हमारे देश में
- विश्व पटल पर
- शिक्षा
- गाथाएं जो स्मृति में सुरक्षित हैं
- नारी उत्पीड़न और प्रतिरोध
- हर जोर–जुल्म की टक्कर में (देश–दुनिया में चल रहे संघर्षों की खबरें)
- कविता/गीत
- परिचर्चा/ बहस
- पाठक मंच
- नई कलम से
- इतिहास के पन्नों से
- दस्तावेज
- क्रान्ति कथा (दुनिया भर की महान जनक्रान्तियों की गाथाएं)
- हमारी विरासत
- हमारे समाज के अभिशाप
- कहानी/पुस्तक परिचय/सार–संक्षेप/नाटक
- गतिविधियां
- बोलते आंकड़े .....चींखती सच्चाइयां ....

इस विषय में आपके सुझावों की हमें प्रतीक्षा रहेगी। आप इनमें से किसी भी स्तम्भ के लिए उपयुक्त सामग्री भेजकर महत्वपूर्ण मदद कर सकते हैं।

घोषणा पत्र : प्रपत्र-1

पत्रिका का नाम	–	आह्वान कैम्पस टाइम्स
आवर्तिता	–	त्रैमासिक
भाषा	–	हिन्दी
प्रकाशक-स्वामी का स्थान	–	गोरखपुर
प्रकाशक का नाम	–	आदेश सिंह
राष्ट्रीयता	–	भारतीय
पता	–	'संस्कृति कुटीर' कल्याणपुर, गोरखपुर
मुद्रक का नाम	–	आदेश सिंह
राष्ट्रीयता	–	भारतीय
पता	–	'संस्कृति कुटीर', कल्याणपुर, गोरखपुर
सम्पादक का नाम	–	मुकुल श्रीवास्तव
राष्ट्रीयता	–	भारतीय
पता	–	'संस्कृति कुटीर', कल्याणपुर, गोरखपुर
मुद्रणालय का नाम	–	आफसेट प्रेस, नखास, गोरखपुर

मैं आदेश सिंह, यह घोषणा करता हूं कि उपर्युक्त तथ्य मेरी अधिकतम जानकारी के अनुसार सत्य हैं।

हस्ताक्षर
आदेश सिंह
(प्रकाशक/स्वामी/मुद्रक)

बोलते आंकड़े .../चीखती सच्चाइयां

* एक सर्वे रिपोर्ट के अनुसार भारत में लगभग 1.5 करोड़ तपेदिक (टीबी) के मरीज हैं जिनमें से 5 लाख मरीजों की प्रतिवर्ष मृत्यु हो जाती है।
* हमारे देश में प्रति 10 हजार की आबादी पर 6 कुष्ठ रोगी पाये जाते हैं। पूरी दुनिया के कुल कुष्ठ रोगियों का 58 प्रतिशत भारत में पाये जाते हैं।
* पूरी दुनिया के दृष्टिहीनों की बड़ी आबादी भारत में पायी जाती है। इनकी संख्या 1 करोड़ 30 लाख है।
* भारत में बढ़ते संक्रामक रोगों का प्रतिशत काफी चिन्ताजनक है। प्लेग जैसी महामारी का खतरा फिर पैदा हो चुका है। एक रिपोर्ट के अनुसार पिछले तीन साल में अकेले दिल्ली में 12 हजार लोग डेंगू के शिकार हुए हैं जिनमें 500 की मृत्यु हो गयी।
* दवा के अभाव में इस वक्त देश में प्रतिदिन 9 हजार बच्चों की मौत होती है। हालात यह हैं कि पांच वर्ष से नीचे के लगभग 7 करोड़ बच्चे कुपोषण के शिकार हैं; 23 लाख बच्चे अपनी पहली वर्षगांठ और 12 लाख बच्चे अपनी पांचवीं वर्षगांठ नहीं देखपाते हैं।
* प्रतिवर्ष 12 लाख माताओं की प्रसव के दौरान मृत्यु हो जाती है।
* स्वास्थ्य मंत्रालय की नई वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार सन् 2000 तक देश में 5 हजार प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों, 20 हजार उपकेन्द्रों और तीन हजार आठ सौ सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों की कमी होगी।